जीने की राह

मौका मिला।

ग्रामोदय मेला का आकार इस तरह से तैयार किया गया था, जिसमें आधुनिक और पुरातन भारत का स्वरूप सामने आ सके। विशाल प्रांगण में तीन बड़े-बड़े पंडाल बनाए गए थे। उन पंडालों में केन्द्र और राज्य सरकार के विभिन्न विभागों की योजनाओं की प्रदर्शनी थी। पंडाल में ग्रामीणों के स्टाल भी थे। विशाल पंडाल के बाहर लगभग सौ स्टाल लघु-कुटीर उद्योग से जुड़े कारीगरों के सामान के थे। पचास स्टाल महिला स्वसहायता समूहों द्वारा निर्मित की गई सामग्री के थे। उन पंडालों से थोड़ा हटकर विशाल मंच बनाया गया था। जिसमें दिन में अलग-अलग आयोजन होते थे और रात में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ करता था। चार दिन के इस आयोजन में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र दिल्ली के 250 कलाकारों द्वारा नृत्य और गीत के कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। दूसरी तरफ राममनोहर लोहिया सभागार में विभिन्न विषयों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का कार्यक्रम चला। उप्र और मप्र के कई हिस्सों से प्रदर्शनी देखने हजारों लोग आए, वहीं इस दौरान दो राज्यपाल, केन्द्र और राज्य सरकार के मंत्रियों का भी चित्रकूट आगमन हुआ।

ग्रामोदय मेला का उद्घाटन तत्कालीन बिहार के राज्यपाल माननीय रामनाथ कोविंदजी द्वारा किया गया। उद्घाटन में दीनदयाल शोध संस्थान के संरक्षक माननीय मदनदासजी, दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष माननीय वीरेन्द्रजीत सिंह जी, केन्द्रीय सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्री श्री थावरचंद्र गहलोत, केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री सुदर्शन भगतजी खासतौर पर शामिल हुए। उदघाटन समारोह में श्री कोविंद ने कहा कि एकात्म मानवदर्शन के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी के चिंतन में हमेशा ही ग्रामों का उत्थान रहा है। चित्रकूट में श्रद्धेय नानाजी देशमुख ने दीनदयालजी के सपने को धरातल पर उतारा और उसी का नतीजा है कि इस वनांचल के गांव विकास के मार्ग पर तेजी से आगे बढ़े हैं। राज्यपाल ने कहा कि भारत गांव में बसता है, हर व्यक्ति के जीवन में एक प्रश्न रहता है कि उन्होंने अपने जीवन में ज़्या किया? राष्ट्रऋषि नानाजी ने समाज को एक दिशा दी कि एक व्यक्ति अपने जीवन में ज़्या नहीं कर सकता। श्रद्धेय नानाजी ने समाज के लिए सिर्फ जीते जी ही नहीं किया, बल्कि अपना देहदान करके शरीर को भी समाज के लिए दे दिया। उन्होंने कहा कि भारत माता से यदि माता शज्द हटा दिया जाये तो भारत केवल एक भूखण्ड मात्र रह जाएगा। दीनदयाल शोध संस्थान पंडितजी के सपनों का भारत तैयार कर रहा है। संस्थान की समाज शिल्पी दंपति योजना जैसे अनेक अनुकरणीय प्रयासों से भारत सरकार भी अपनी योजनाओं में मार्गदर्शन ले रही है। श्री थावरचन्द्र गहलोत ने कहा कि राष्ट्रऋषि नानाजी ने पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी के एकात्म मानवदर्शन को वसुधैव कुटुज़्बकम के आधार पर साकार रुप दिया है। आयोजन में केन्द्रीय जलसंसाधन मंत्री